This question paper contains 6 printed pages.]

आपका अनुक्रमांक .....

5380 **A**

B.A. (Programme)/II

(L)

HINDI DISCIPLINE – Paper II

हिन्दी अनुशासन - प्रश्न पत्र II

(हिन्दी गद्य विधाएँ, उपन्यास और हिन्दी गद्य साहित्य का इतिहास)

(प्रवेश-वर्ष 2004/2006 और तत्पश्चात् नियमित कॉलेजों के विद्यार्थियों के लिए/NCWEB के विद्यार्थियों के लिए)

समय : 3 घण्टे **पूर्णांक : 75**

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।)

टिप्पणी : प्रश्न-पत्र पर अंकित पूर्णांक नियमित कॉलेजों (श्रेणी 'A') के विद्यार्थियों के लिए अनुप्रयोज्य हैं। तथापि ये अंक, NCWEB के विद्यार्थियों के संबंध में उनके परिणाम के संकलन के लिए नियुक्त अधिनिर्णय के समय पर, उनके आनुपातिक रूप में अधिक होंगे।

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(क) आदमियों की तिज़ारत करना मूर्खों का काम है। सोने और लोहे के बदले मनुष्य को बेचना मना है। आजकल भाप की कलों का दाम तो हजारों रुपया है, परन्तु मनुष्य कौड़ी के सौ-सौ बिकते हैं। सोने और चाँदी की प्राप्ति से जीवन का आनंद नहीं मिल सकता, सच्चा आनंद तो मुझे मेरे काम से मिलता है। मुझे अपना काम मिल जाए तो फिर स्वर्ग-प्राप्ति की इच्छा नहीं, मनुष्य-पूजा ही सच्ची ईश्वर-पूजा है। मंदिर और गिरजे में क्या रखा है?

[P.T.O.

ईंट, पत्थर, चूना कुछ ही कहो आज से हम अपने ईश्वर की तलाश मंदिर, मस्जिद, गिरिजा और पोथी में न करेंगे। अब तो यही इरादा है कि मनुष्य की अनमोल आत्मा में ईश्वर के दर्शन करेंगे। यही आर्ट है। यही धर्म है।

अथवा

अशोक का वृक्ष जितना भी मनोहर हो, जितना भी रहस्यमय हो, जितना भी अलंकारमय हो, परन्तु है वह उस विशाल सामंत सभ्यता की परिष्कृत रुचि का ही प्रतीक, जो साधारण प्रजा के परिश्रमों पर पली थी, उसके रक्त के संसार कणों को खाकर बड़ी हुई थी और लाखों-करोड़ों की उपेक्षा से समृद्ध हुई थी। वे सामंत उखड़ गये, समाज ढह गए और मदनोत्सव की धूमधाम भी मिट गयी। संतान कामनियों को गंधर्वों से अधिक शक्तिशाली देवताओं का वरदान मिलने लगा—पीरों ने, भूत-भैरवों ने, काली-दुर्गा ने यक्षों की इज्जत घटा दी। दुनिया अपने रास्ते चली गई, अशोक पीछे छूट गया। 8

(ख) अब शकलदीप बाबू और भी व्यस्त रहने लगे। पूजा-पाठ का उनका कार्यक्रम पूर्ववत जारी था। लोगों से बातचीत करने में उनको काफी मजा आने लगा और वह बातचीत के दौरान में ऐसी स्थिति उत्पन्न कर देते कि लोगों को कहना पड़ता कि नारायण अवश्य ही ले लिया जाएगा। वह अपने घर पर एकत्रित नारायण तथा उसके मित्रों की बातें छिपकर सुनते और कभी-कभी अचानक उनके दल में घुस जाते तथा जबरदस्ती बात करने लगते। कभी-कभी नारायण को अपने पिता की यह हरकत बहुत बुरी लगती और वह क्रोध में दूसरी ओर देखने लगता। रात में शकलदीप बाबू चौंक कर उठ बैठते और बाहर आकर कमरे में लड़के को सोते हुए देखने लगते या आँगन में खड़े होकर आकाश को निहारने लगते।

अथवा

अब बुधिया पेबंदवाली बुधिया नहीं है। अब उसकी चुनर का रंग कभी मलिन नहीं होता। उसकी चोली सिवाई पट्टी का दरजी सीता है। माना वह रोज घास को आती-जाती है, लेकिन उसके हाथ में ठेले की बात, आप घिस्से भी नहीं पाएँगे। रंग कहीं साँवला है, लेकिन उसमें गड्ढे के सड़े पानी की मुर्दनी नहीं है, कालिंदी का कलकल-छलछल है, जिसके कूल पर कितने गोपाल बंशी टेरते, कितने ही नंदलाल रासलीला का स्वप्न देखते हैं। बुधिया जिस सरेह में निकल जाती, जिंदगी तरंगें लेती। उसके बालों में चमेली का तेल चपचप करता है। उसकी माँग में टकही टुकली चपचप करती है। किसी वृंदावन में एक थे गोपाल, हजार थीं गोपियाँ। यहाँ एक है गोपी और हजार गोपाल। 8

2. (क) किन्हीं **चार** प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 4×4=16

(*i*) 'करुणा' निबंध के आधार पर करुणा और क्रोध में अन्तर स्पष्ट कीजिए।

(*ii*) 'अशोक के फूल' निबंध का प्रतिपाद्य संक्षेप में बताइए।

(*iii*) रांगेय राघव ने अपने संस्मरण में बंगाल के अकाल की विभीषिका को किस रूप में चित्रित किया है? रेखांकित कीजिए।

(*iv*) 'भोलाराम का जीव' में हरिशंकर परसाई ने समाज के किस सत्य का उद्घाटन किया है?

(*v*) 'बिबिया' में वर्णित दुख के कारणों पर प्रकाश डालिए।

(*vi*) 'सूखी डाली' के प्रतीकार्थ का विवेचन कीजिए।

(*vii*) 'ठाकुर का कुआँ' में चित्रित गंगी के विद्रोही रूप का रेखांकन कीजिए।

(*viii*) 'डिप्टी-कलक्टरी' में निहित व्यंग्य को उद्घाटित कीजिए।

(ख) किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 1×3=3

(*i*) अध्यापक पूर्णसिंह के अनुसार 'नास्तिकता' क्या है?

(*ii*) शुक्ल जी के अनुसार करुणा का 'विषय' क्या है?

(*iii*) 'अशोक-कल्प' के अनुसार अशोक के फूल कितने प्रकार के होते हैं?

(*iv*) 'तूफानों के बीच : अदम्य जीवन' में लेखक के साथी का नाम क्या है?

(*v*) 'भोलाराम का जीव' में बड़े साहब ने वजन के रूप में नारद से किस वस्तु की माँग की?

(*vi*) महादेवी वर्मा के अनुसार पुरुष किस कारण स्त्री को बराबर का दर्जा नहीं देना चाहता?

(*vii*) निर्मल वर्मा ब्रेख्त को 'कम्युनिस्ट' क्यों कहते हैं?

3. किसी **एक** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 8

(*i*) रमानाथ दफ्तर से घर पहुँचा, तो चार बज रहे थे। वह दफ्तर ही में था कि आसमान पर बादल घिर आये। पानी आना ही चाहता था, पर रमा को घर पहुँचने की इतनी बेचैनी हो रही थी कि उससे रुका न गया। हाते के बाहर भी न निकलने पाया था कि जोर की वर्षा होने लगी। आषाढ़ का पहला पानी था, एक ही क्षण में वह लथपथ हो गया। फिर भी वह कहीं रुका नहीं। नौकरी मिल जाने का शुभ समाचार सुनाने का आनंद इस दौंगड़े की क्या परवाह कर सकता था? वेतन तो केवल तीस ही रुपये थे, पर जगह आमदनी की थी। उसने मन-ही-मन हिसाब लगा लिया था कि कितना मासिक बचत हो जाने से वह जालपा के लिए चन्द्रहार बनवा सकेगा। अगर पचास-साठ रुपये महीने भी बच जाएँ, तो पाँच साल में जालपा गहनों से लद जायेगी। कौन-सा आभूषण कितने का होगा, इसका भी उसने अनुमान कर लिया था। घर पहुँचकर उसने कपड़े भी न उतारे, लथपथ जालपा के कमरे में पहुँच गया। (गबन)

(*ii*) इस भोग-विलास में रमा को अगर कोई अभिलाषा थी, तो यह कि जालपा भी यहाँ होती। जब तक वह पराश्रित था, दरिद्र था, उसकी विलासेन्द्रियाँ मानों मूर्च्छित हो रही थीं। इन शीतल झोंकों ने उन्हें सचेत कर दिया। वह इस कल्पना में मग्न था कि यह मुकदमा खत्म होते ही उसे अच्छी जगह मिल जाएगी। तब वह जाकर जालपा को मना लावेगा और आनंद से जीवन सुख भोगेगा। हाँ, वह नये प्रकार का जीवन होगा, उसकी मर्यादा कुछ और होगी, सिद्धांत कुछ और होंगे। उसमें कठोर संयम होगा और पक्का नियंत्रण। अब उसके जीवन का कुछ उद्देश्य होगा, कुछ आदर्श होगा। केवल खाना, सोना और रुपये के लिए हाय-हाय करना ही जीवन का व्यापार न होगा। इसी मुकदमे के साथ इस मार्गहीन जीवन का अंत हो जाएगा। दुर्बल इच्छा ने उसे यह दिन दिखाया था और अब एक नये और सांस्कृतिक जीवन का सपना दिखा रही थी। (गबन)

(*iii*) वहाँ उसके और ममी के बीच में बहुत सारी चीजें आ जाती हैं। ममी का नकली चेहरा, कॉलेज, कॉलेज की बड़ी-सी बिल्डिंग, कॉलेज की ढेर सारी लड़कियाँ, कॉलेज के ढेर सारे काम। थोड़ी-थोड़ी देर में बजने वाले घंटे, घंटा बजने पर होने वाली हलचल... इन सबके एक सिरे पर वह रहता है चुपचाप, सहमा-सा और दूसरे पर ममी रहती हैं—किसी को आदेश देती हुईं, किसी के साथ सलाह-मशवरा करती हुईं, किसी को डाँटती हुईं। और इसीलिए उसने कॉलेज जाना छोड़ दिया। घर में चाहे वह अकेला रह ले, पर वहाँ नहीं जाता। वहाँ किसके पास जाए? ममी तो वहाँ रहती नहीं। रहती हैं बस एक प्रिंसिपल, जिनके चारों ओर बहुत सारे काम, बहुत सारे लोग रहते हैं। नहीं रहता है तो केवल बंटी। (आपका बंटी)

(*iv*) चेहरा उभरने के साथ ही पहली बात मन में आई—अजय के मुकाबले में जोशी कैसे हैं? और दूसरी बात आई—मीरा के मुकाबले

में कैसे हैं? मीरा को उसने नहीं देखा। बस सुना है उसके बारे में। अनेक काल्पनिक चेहरे भी उभरे हैं मन में। पहले वह उन काल्पनिक चेहरों की तुलना अपने से किया करती थी। वह तुलना बहुत स्वाभाविक भी थी। पर जोशी और मीरा के मुकाबले की क्या तुक भला? फिर भी मन है कि बार-बार कुछ तौल-परख रहा है। उसे याद है, पहले भी जब-जब उसने जोशी के बारे में कुछ सोचा था, अनजाने और अनचाहे ही हमेशा अजय आकर उपस्थित हो गया था ... केवल अजय ही नहीं, कहीं मीरा भी आकर उपस्थित हो जाती थी। (आपका बंटी)

4. किसी **एक** प्रश्न का उत्तर दीजिए : 12

   (*i*) 'गबन' उपन्यास के जरिये अंग्रेजों की न्याय-प्रणाली पर टिप्पणी कीजिए।

   (*ii*) जालपा का चरित्र-चित्रण कीजिए।

   (*iii*) 'आपका बंटी' उपन्यास के कथानक पर प्रकाश डालिए।

   (*iv*) 'आपका बंटी' उपन्यास के आधार पर बंटी की चारित्रिक विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए।

5. निबंध **अथवा** संस्मरण का विकासात्मक परिचय दीजिए। 10

6. 'रिपोर्ताज' **अथवा** व्यंग्य विधा की विकास-यात्रा को स्पष्ट कीजिए। 10